जोशीमठ में भू-अवतलन

जोशीमठ में भू-अवतलन

हालिया उपग्रह छवियों से यह ज्ञात हुआ है कि जोशीमठ में केवल 12 दिनों (27 दिसंबर, 2022 और 8 जनवरी, 2023 के बीच) के दौरान 5.4 सेमी की तेजी से भू-धँसाव देखा गया है।

भू-अवतलन (Land Subsidence)

- अवतलन का तात्पर्य भूमिगत पदार्थों के संचलन के कारण भूमि के धँसने से है।
- कारण: (मानव जनित + प्राकृतिक) पानी/तेल/प्राकृतिक संसाधनों का अपनयन (removal), खनन गतिविधियाँ, भूकंप, मृदा अपरदन, मिट्टी का संघनन, सिंकहोल का निर्माण आदि।

एम.सी. मिश्रा समिति की रिपोर्ट (1976) ने पहले से ही संवेदनशील इस क्षेत्र में अनियोजित विकास की ओर इशारा करते हुए जोशीमठ के बारे में सर्वप्रथम चेतावनी दी थी।

जोशीमठ

के बारे में

- ऋषिकेश-बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-7) (उत्तराखंड) पर स्थित
- भूकंपीय क्षेत्र-V के अंतर्गत आता है

धार्मिक महत्त्व

- बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब की यात्रा करने वाले पर्यटकों के लिये प्रमुख पारगमन बिंदु (transit point)
- आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित 4 प्रमुख मठों में से एक का स्थान

सामरिक महत्त्व

- भारतीय सेना की सबसे महत्त्वपूर्ण छावनियों में से एक

धँसाव के संभावित कारण

- जोशीमठ प्राचीन भूस्खलन सामग्री पर बना है न कि मुख्य चट्टान पर एक भौगोलिक भ्रंश का पुन: सक्रिय होना (किन्हीं दो चट्टानों/शैलों के बीच उत्पन्न दरार या विभंग)
- अनियोजित निर्माण
- प्राकृतिक जल प्रवाह में बाधा
- जलविद्युत गतिविधियाँ

विशेषज्ञों की राय:

- क्षेत्र में विकास एवं जलविद्युत परियोजनाओं को पूर्ण रूप से बंद किया जाए
- जल निकासी योजना का पुनर्विकास
- बेहतर समन्वय- सरकार-नागरिक निकाय - सीमा सड़क संगठन
- निवासियों का सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरण
- मिट्टी की क्षमता को बनाए रखने में मदद के लिये पुन: वनीकरण

और पढ़ें...

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/land-subsidence-in-joshimath-1